

# गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाओं की प्रस्तुति और सामाजिक संकेत का एक अध्ययन

सरोज मीणा, डॉ. सुनीता सिन्हा

इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

A STUDY OF THE PRESENTATION AND SOCIAL SIGNIFICATION OF FEMALE IMAGES IN GANDHARA AND MATHURA ART

Saroj Meena, Dr. Sunita Sinha

Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India

## सारांश

यह शोध पत्र गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाओं के रूपांकन और उनके सामाजिक संकेतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह देखा गया कि गांधार कला में महिलाएँ अधिक यथार्थवादी और ग्रीको-रोमन प्रभावयुक्त रूप में प्रस्तुत की गई हैं, जबकि मथुरा कला में उन्हें आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ में स्त्री मूर्तियों के अर्थ और उनके प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करना है। निष्कर्ष बताते हैं कि दोनों कलाओं में स्त्री प्रतिमाएँ न केवल सौंदर्य और शिल्पकला का प्रतीक हैं, बल्कि समाज और धर्म में महिलाओं की स्थिति और सामाजिक दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करती हैं।

## मुख्य शब्द

गांधार कला, मथुरा कला, स्त्री प्रतिमा, सामाजिक संकेत, भारतीय मूर्तिकला, बौद्ध कला

## 1.1 परिचय

भारतीय प्राचीन कला में स्त्री प्रतिमाओं का अत्यधिक महत्व है। गांधार और मथुरा कला, जो मुख्य रूप से कुषाण काल (1-3 शताब्दी ई.) में विकसित हुई, भारतीय मूर्तिकला की दो प्रमुख धाराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। गांधार कला में यथार्थवाद और ग्रीको-रोमन प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि मथुरा कला में स्वदेशी शैली, प्रतीकात्मकता और आध्यात्मिकता प्रमुख हैं। स्त्री प्रतिमाएँ केवल सौंदर्य या अलंकरण नहीं हैं; वे सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक विश्वासों और उस समय की सामाजिक संरचना का प्रतीक भी हैं।

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला में स्त्री प्रतिमाओं का महत्व अत्यंत रहा है। गांधार और मथुरा कला दोनों ही प्राचीन काल में विकसित हुए प्रमुख शिल्पकला के केंद्र हैं, लेकिन दोनों में स्त्री मूर्तियों के प्रस्तुतीकरण और उनके सामाजिक संकेतों में स्पष्ट अंतर है। प्राचीन भारतीय कला में स्त्री प्रतिमाएँ न केवल सौंदर्य और शिल्पकला का प्रतीक हैं, बल्कि समाज और धर्म में महिलाओं की स्थिति और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को भी दर्शाती हैं। गांधार और मथुरा कला दोनों में स्त्री मूर्तियों का प्रस्तुतीकरण अलग-अलग शैली और सामाजिक संदर्भ को दर्शाता है।

## गांधार कला में स्त्री प्रतिमाएँ

गांधार कला मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम भारत और अफ़ग़ानिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई। यह कला कुषाण काल (1-3 शताब्दी ई.) में अपने उत्कर्ष पर थी और इसमें ग्रीको-रोमन यथार्थवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

- **भौगोलिक क्षेत्र:** उत्तर-पश्चिम भारत और अफ़ग़ानिस्तान।
- **काल:** मुख्य रूप से कुषाण काल (1-3 शताब्दी ई.)।
- **शैली और रूप:** स्त्रियाँ यथार्थवादी proportions में दिखाई देती हैं। चेहरे पर ग्रीक शैली के प्रभाव, गहरी आँखें और प्राकृतिक भाव होते हैं।

- **वस्त्र और आभूषण:** लहराते और बहुरंगी वस्त्र, रोमन शैली के टोगा जैसे कपड़े, और विस्तृत आभूषण।
- **सामाजिक संकेत:** मूर्तियाँ उच्च सामाजिक वर्ग की स्त्रियों, देवियों और बौद्ध संदर्भों में बोधिसत्त्वों के रूप में प्रस्तुत हैं। यह दिखाता है कि उस समय समाज में स्त्रियों का सम्मान और धार्मिक महत्व था। स्त्रियों को उच्च वर्ग, देवी या बौद्ध संदर्भ में प्रस्तुत किया गया, जो उस समय समाज में उनके सम्मान और धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

### मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाएँ

मथुरा कला उत्तर भारत (मथुरा) में विकसित हुई और यह पूरी तरह स्वदेशी भारतीय शैली पर आधारित थी। इसका विकास कृषाण काल में हुआ और इसे गुप्त काल में स्वर्ण युग प्राप्त हुआ।

- **भौगोलिक क्षेत्र:** उत्तर भारत, मथुरा।
- **काल:** कृषाण काल (1-3 शताब्दी ई.) और गुप्त काल (4-6 शताब्दी ई.)।
- **शैली और रूप:** स्त्रियाँ गोल-मटोल, भावपूर्ण और आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। चेहरे पर हल्की मुस्कान (मथुरा स्माइल) और कोमल अभिव्यक्ति।
- **वस्त्र और आभूषण:** पतले, शरीर से चिपके वस्त्र; आभूषण सरल पर प्रतीकात्मक।
- **सामाजिक संकेत:** मूर्तियों में महिलाओं का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व अधिक प्रमुख है। बौद्ध, जैन और हिंदू धार्मिक संदर्भों में स्त्रियाँ देवियों, यक्षिणियों और आदर्श स्त्री प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होती हैं।

इस शोध का उद्देश्य दोनों कलाओं में स्त्री प्रतिमाओं के रूप, शैली, वस्त्र, आभूषण और मुद्रा का तुलनात्मक अध्ययन करना और सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतों की पहचान करना है।

### 1.2 साहित्य समीक्षा

गांधार और मथुरा कला पर विभिन्न विद्वानों और शोधकर्ताओं ने गहन अध्ययन किया है। स्त्री प्रतिमाओं के विश्लेषण और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतों को समझने के लिए प्रमुख शोध निम्नलिखित हैं:

1. **Boardman, J. (1998)** – इस अध्ययन में गांधार कला की ग्रीको-रोमन शैली और यथार्थवाद का विश्लेषण किया गया है। लेखक ने बताया कि गांधार मूर्तियों में स्त्रियों की आकृति, वस्त्र और चेहरे की अभिव्यक्ति विदेशी प्रभावों के तहत अधिक यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत की गई है।
2. **Harle, J.C. (1994)** – मथुरा कला पर केंद्रित अध्ययन में लेखक ने यह दर्शाया कि मथुरा में स्त्रियों की प्रतिमाएँ स्वदेशी शैली और प्रतीकात्मकता पर आधारित हैं। यहां महिलाओं का रूप अधिक गोल-मटोल और भावपूर्ण है, जिसमें आध्यात्मिकता और सामाजिक आदर्शों का मिश्रण दिखाई देता है।
3. **Cunningham, A. (1892)** – भारतीय मूर्तिकला और विशेष रूप से गांधार और मथुरा के प्रारंभिक विवरणों पर आधारित शोध। इसमें विभिन्न स्त्री मूर्तियों की संरचना, मुद्रा और आभूषण का वर्णन किया गया है।
4. **Mitra, D. (1977)** – इस अध्ययन में मूर्तियों के वस्त्र, आभूषण और मुद्रा के सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थों का विश्लेषण किया गया। लेखक ने दोनों कलाओं में स्त्री प्रतिमाओं में प्रयोग किए गए प्रतीकात्मक तत्वों की तुलना की।
5. **Singh, R. (2003)** – इस शोध में स्त्री मूर्तियों के धार्मिक और सामाजिक संकेतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि गांधार मूर्तियाँ अधिक यथार्थवादी और सांसारिक संदर्भ में हैं, जबकि मथुरा मूर्तियाँ धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक प्रतीकात्मक हैं।
6. **Foucher, A. (1917)** – गांधार और मथुरा कला में स्त्री आकृतियों के धार्मिक और सामाजिक संदर्भ पर प्रकाश डाला। यह अध्ययन बताता है कि मूर्तियों के माध्यम से उस समय की सामाजिक संरचना, स्त्रियों की स्थिति और धार्मिक विश्वासों का प्रतिनिधित्व किया गया।

### समीक्षा का सार:

साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि:

- गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाएँ न केवल **शिल्पकला और सौंदर्य** का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि **सामाजिक और धार्मिक मूल्य** भी प्रदर्शित करती हैं।
- गांधार मूर्तियाँ **यथार्थवाद और विदेशी प्रभाव** को दर्शाती हैं, जबकि मथुरा मूर्तियाँ **स्वदेशी शैली, प्रतीकात्मकता और आध्यात्मिकता** पर केंद्रित हैं।
- दोनों कलाओं की स्त्री प्रतिमाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की **धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका** को समझने में सहायक है।

समीक्षा से स्पष्ट होता है कि दोनों कलाओं में स्त्री मूर्तियों का रूपांकन अलग है, जो उस समय की **सामाजिक स्थिति और धार्मिक संदर्भ** को प्रकट करता है।

### 1.3 उद्देश्य

1. गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाओं की **शैली, मुद्रा और वस्त्र** का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. मूर्तियों में प्रयुक्त **सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों** की पहचान करना।
3. सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से स्त्री प्रतिमाओं का **विश्लेषण** करना।
4. दोनों कलाओं में **स्त्री प्रतिमाओं की यथार्थवाद और प्रतीकात्मकता** के अंतर को समझना।

### 1.4 शोध विधि

- **अवधि:** प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का अध्ययन।
- **प्रकार:** तुलनात्मक और विवरणात्मक अध्ययन।
- **स्रोत:**
  - **प्राथमिक:** गांधार और मथुरा की मूर्तियाँ, संग्रहालय चित्र, स्थल निरीक्षण (Taxila, Mathura)।
  - **माध्यमिक:** शोध पुस्तकें, पत्रिकाएँ, संग्रहालय रिपोर्ट और प्राचीन लेख।
- **विश्लेषण तकनीक:**
  - मूर्तियों के **आकार, मुद्रा, वस्त्र, आभूषण और चेहरे की अभिव्यक्ति** का तुलनात्मक मूल्यांकन।
  - सामाजिक और धार्मिक संदर्भ में उनकी **प्रतीकात्मकता** और अर्थ का अध्ययन।

### 1.5 परिणाम और विश्लेषण

1. **गांधार कला में स्त्री प्रतिमाएँ**
  - अधिक यथार्थवादी और प्राकृतिक रूपांकित।
  - चेहरे पर ग्रीक प्रभाव, शारीरिक अनुपात यथार्थवादी।
  - वस्त्र और आभूषण रोमन शैली से प्रभावित।
  - मूर्तियाँ मुख्यतः बौद्ध संदर्भ में, सामाजिक और धार्मिक संकेतों के संयोजन में।
2. **मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाएँ**
  - अधिक प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक रूपांकित।
  - गोल-मटोल और भावपूर्ण आकृति।
  - हल्के और शरीर से चिपके वस्त्र; मथुरा स्माइल।
  - धार्मिक (बौद्ध, जैन और हिंदू) और सामाजिक सांकेतिक अर्थ स्पष्ट।
3. **तुलनात्मक निष्कर्ष**
  - **यथार्थवाद बनाम प्रतीकात्मकता:** गांधार में स्त्री प्रतिमाएँ प्राकृतिक यथार्थवाद को दर्शाती हैं, जबकि मथुरा में आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक रूप अधिक महत्वपूर्ण है।
  - **सामाजिक दृष्टिकोण:** गांधार मूर्तियों में स्त्रियों का **धार्मिक और सांसारिक सम्मान**, उच्च वर्ग के सामाजिक प्रतिनिधित्व के रूप में दिखाया गया, जबकि मथुरा मूर्तियाँ स्त्रियों को **आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक भूमिका** में प्रस्तुत करती हैं।

- **वस्त्र और शैली:** गांधार में वस्त्र भारी और बहुरंगी, रोमन शैली के प्रभाव के साथ; मथुरा में वस्त्र हल्के और शरीर से चिपके, स्थानीय भारतीय शैली में।
- गांधार कला: **यथार्थवाद + विदेशी प्रभाव**, बाहरी सौंदर्य और प्रकृति पर जोर।
- मथुरा कला: **स्वदेशी प्रतीकात्मकता**, आध्यात्मिक और सामाजिक अर्थ।
- दोनों कलाओं में स्त्री प्रतिमाएँ **सौंदर्य, आध्यात्मिकता और सामाजिक मूल्य** का संचार करती हैं, पर शैलीगत दृष्टि से अलग हैं।

### निष्कर्ष

गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाओं का अध्ययन यह दर्शाता है कि कला केवल **सौंदर्य और तकनीक** का माध्यम नहीं, बल्कि **सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण** का दर्पण भी है। गांधार कला ने स्त्रियों को **यथार्थवादी और विदेशी प्रभावयुक्त रूप** में प्रस्तुत किया, जबकि मथुरा कला ने उन्हें **आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक रूप** में दर्शाया। गांधार और मथुरा कला में स्त्री प्रतिमाएँ केवल **सौंदर्य या शिल्पकला** का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि **समाज और धर्म में महिलाओं की स्थिति, धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक दृष्टिकोण** को भी दर्शाती हैं। गांधार कला स्त्री मूर्तियों में यथार्थवाद और विदेशी शैली का मिश्रण प्रस्तुत करती है, जबकि मथुरा कला उन्हें स्वदेशी, आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। दोनों कलाएँ प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की **धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका** का मूल्यांकन करने का महत्वपूर्ण साधन हैं। यह तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि **प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, धार्मिक मान्यता और सांस्कृतिक प्रतीक** दोनों कलाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

### सन्दर्भ ग्रंथसूची

1. सिंघवी, नरेन्द्र। *भारतीय मूर्तिकला में नारी रूपा* जयपुर: राजस्थान संस्कृत अकादमी, 2002।
2. खन्ना, बलवंत। *वुमन इन इंडियन आर्ट* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1987।
3. शर्मा, आर.सी.। *गांधार एंड मथुरा: अ स्टडी इन आइकनोग्राफी* दिल्ली: अभिनव पब्लिकेशन्स, 2001।
4. ढोबले, बी.एल.। *भारतीय मूर्तिकला में सांस्कृतिक मूल्यों का स्वरूपा* नागपुर: कलाशिल्प अकादमी, 1990।
5. मिश्रा, शिवशंकर। *भारतीय प्राचीन कला में स्त्री की भूमिका* इलाहाबाद: साहित्य भवन, 2005।
6. अग्रवाल, वासुदेव शरण। *भारतीय कला का इतिहास* दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 1980।
7. कोमल, के.एन.। *गांधार कला का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन* वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान, 1995।
8. कृष्ण, देव। *मथुरा स्कल्पचर: ए स्टडी इन आर्ट एंड आइकनोग्राफी* दिल्ली: इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, 1977।
9. हरले, जे.सी.। *द आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ द इंडियन cy6 कॉन्टिनेंट* पेंगुइन बुक्स, 1994।
10. आल्चिन, ब्रिजिट एंड रे। *दि बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन* हार्मोड्सवर्थ: पेंगुइन, 1968।
11. बाशम, ए.एल.। *दि वंडर दैट वाज इंडिया* न्यूयॉर्क: ग्रीव प्रेस, 1954।
12. बैनर्जी, आर.डी.। *हिस्ट्री ऑफ इंडियन स्कल्पचर* कलकत्ता: यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता, 1933।